

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , किंग्स, व्याख्यान 10

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

यहूदा से बाहर पैगंबर, अहिजा की चेतावनी, बाशा का राजवंश, ओम्री और अहाब

समीक्षा - यहूदा से बाहर पैगंबर - 1 राजा 13

हम 1 राजा 13 में थे। हमने उस अध्याय को देखा जहां यहूदा से परमेश्वर का आदमी उत्तर की ओर बेतेल की ओर आता है और यारोबाम की वेदी के खिलाफ भविष्यवाणी करता है, और अन्य बातों के अलावा एक दीर्घकालिक भविष्यवाणी देता है कि योशियाह नामक एक राजा अंततः उन झूठे भविष्यवक्ताओं और पुजारियों की हड्डियों को उस वेदी पर जला देंगे। और फिर कुछ अल्पकालिक भविष्यवाणियाँ भी हुईं जो पूरी भी हुईं जिन्होंने दीर्घकालिक भविष्यवाणी को प्रमाणित किया। आइए "डी," " अहियाह की चेतावनी, 1 राजा 14:1-20" पर चलते हैं।

ठीक है, प्रश्न का संबंध उस बात से है जो हमने पिछली बार छुआ था। सवाल यह है: यहूदा के इस परमेश्वर के आदमी को उत्तरी साम्राज्य के पुराने भविष्यवक्ता ने धोखा दिया है, और हम कैसे समझाएँ कि वहाँ क्या हो रहा है? मुझे ऐसा लगता है कि उत्तर का पुराना भविष्यवक्ता सच्चा भविष्यवक्ता था। उसने सुना कि यहूदा में से परमेश्वर के इस जन ने उस वेदी पर यारोबाम का सामना करने के लिए क्या किया था। मुझे लगता है कि उसने जो किया उसके प्रति उसे सहानुभूति थी। और ऐसा प्रतीत होता है कि वह इस व्यक्ति, दक्षिण के इस धर्मात्मा व्यक्ति के साथ कुछ संगति करना चाहता था। वह संभवतः अलग-थलग था और वहाँ मौजूद अन्य विश्वासियों से उसका ज्यादा संपर्क नहीं था। ऐसा करने के लिए वह झूठ बोलता है। मुझे तो यह स्वार्थवश लगता है। अब निःसंदेह, जब उसने झूठ बोला, तो वह एक सच्चे भविष्यवक्ता का कार्य नहीं कर रहा था। इसीलिए मैं भविष्यवाणी को एक कार्यालय के बजाय एक समारोह के रूप में बोलना पसंद करता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि भविष्यवाणी तब होती है जब प्रभु अपना वचन किसी व्यक्ति के मुंह में डालता है ताकि वह जो शब्द बोलता है वह ईश्वर के शब्द हों। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर बार जब वे अपना मुंह खोलते हैं तो वे भविष्यवक्ता का कार्य कर रहे होते हैं। इस बूढ़े व्यक्ति ने, भले ही उसने ऐसा किया था और उसे भविष्यवक्ता के रूप में जाना जाता था, इस विशेष उदाहरण में उसने पाप किया, और उसने कुछ ऐसा किया जो उसे स्पष्ट रूप से नहीं करना चाहिए था।

दूसरी ओर, यहूदा में से परमेश्वर के भक्त को यहोवा की ओर से सीधा वचन दिया गया था कि उसे उसी रास्ते से वापस नहीं जाना है, न ही वहां किसी के साथ रोट्टी खाना है और न ही पानी पीना है, लेकिन उसने सुनी इस बूढ़े आदमी ने जब कहा कि उसे एक रहस्योद्घाटन हुआ है। उन्होंने पुराने भविष्यवक्ता की बात सुनी, भले ही यह उनके द्वारा प्राप्त पिछले रहस्योद्घाटन का खंडन करता था। उसे उसकी बात नहीं सुननी चाहिए थी क्योंकि ईश्वर स्वयं का खंडन नहीं करता। परमेश्वर एक व्यक्ति से कुछ और और दूसरे से कुछ और नहीं कहेगा। इसलिए मुझे लगता है कि ये दोनों व्यक्ति गलती पर थे।

अब, यहूदा में से परमेश्वर के जिस जन ने उस समय परमेश्वर के वचन की अवहेलना की, उसके लिए उसका न्याय किया गया। तब पुराना भविष्यवक्ता एक सच्चे भविष्यवक्ता का कार्य करता है जब वह कहता है, "तुम्हारे साथ यही होगा: तुम अपने पुरखाओं के साथ विश्राम नहीं करोगे।" और उस पर शेर ने हमला कर मार डाला। तो उस समय वह फिर से एक सच्चे भविष्यवक्ता की भूमिका निभा रहा है। लेकिन जब उसने उससे झूठ बोला, तो यह निश्चित रूप से एक बहुत ही दुष्ट काम था जो उसने किया। यह एक पापपूर्ण कार्य था। आप एक सच्चे भविष्यवक्ता हो सकते हैं परंतु एक अच्छे इंसान नहीं हो सकते। आमतौर पर एक भविष्यवक्ता एक धर्मात्मा व्यक्ति होता है, लेकिन आप एक सच्चे भविष्यवक्ता और बुरे व्यक्ति भी हो सकते हैं। यह साथी इसका उदाहरण देता है। बिलाम एक विधर्मी भविष्यवक्ता था, फिर भी वह एक सच्चा भविष्यवक्ता था क्योंकि प्रभु ने अपने शब्द उसके मुँह में डाले थे। वह इस्राएल को श्राप देना चाहता था परन्तु नहीं दे सका; इसके बजाय उसने इस्राएल को आशीर्वाद दिया। मुझे लगता है कि इस तरह के मामले अपवाद हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि आप इस अंतर को समझें कि एक भविष्यवक्ता जो कुछ भी कहता है वह हमेशा एक भविष्यवक्ता नहीं होता है। वह गलत बोल सकता है। तो आप एक *भविष्यसूचक कार्य करते हैं*, और मुझे लगता है कि जो होता है उसके बारे में बात करने का यह एक बेहतर तरीका है।

आप नाथन को लीजिए जब दाऊद ने उससे पूछा, "क्या मैं यहोवा के लिये एक मन्दिर, और एक भवन बनाऊं?" और नाथन कहता है, "आगे बढ़ो और यह करो; प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दें।" लेकिन आप देखिए कि यह उनका अपना शब्द था। यह परमेश्वर का वचन नहीं था क्योंकि उस रात

यहोवा उसके पास आया और बोला, “वापस जाओ और दाऊद से कहो: तुम्हें मेरे लिए घर नहीं बनाना है। मैं तुम्हारे लिए एक घर बनाने जा रहा हूँ”--एक राजवंश के अर्थ में। तो नाथन ने गलत कहा। उन्होंने तब बोला जब डेविड ने उन्हें भविष्यवक्ता के रूप में बोलने के लिए कहा था। उन्होंने एक आदमी की तरह बात की। जब प्रभु का वचन उसके पास आया तो उसे वापस जाना पड़ा और खुद को सही करना पड़ा।

एलीशा और ताना मारते युवा और भालू यह एक भविष्यवक्ता के माध्यम से बोले जा रहे परमेश्वर के वचन की मान्यता है, और यदि उस भविष्यवक्ता का उपहास किया जाएगा, तो यह कोई व्यक्तिगत बात नहीं है; यह ऑफिस की बात है। एलीशा के मामले में, मुझे लगता है कि उन्होंने पहचान लिया था कि वह एलिजा का उत्तराधिकारी था, और भले ही वे उसे गंजा होने का ताना दे रहे थे, उनका अनादर उसके कार्य और उसके कार्यालय से भी आगे निकल गया। 2 राजा 2:23 का श्लोक दो: “वहाँ से एलीशा बेतेल को गया। जब वह सड़कों पर चल रहा था, तो नगर से कुछ युवक निकले और उसका उपहास करने लगे, 'आगे बढ़ो, गंजे सिर।' उन्होंने कहा, 'ऊपर जाओ!' उसने पीछे मुड़कर प्रभु का नाम लेकर उन्हें श्राप दिया और दो भालू आये और उनमें से 42 जवानों को मार डाला।” मैंने एनआईवी अध्ययन बाइबिल में जो टिप्पणी दी है वह है: “एलीशा ने लैव्यव्यवस्था 26:21-22 के वाचा के अभिशाप के समान एक अभिशाप सुनाया।” परिणाम ने उस फैसले की चेतावनी दी जो पूरे राष्ट्र पर आएगा यदि वह अवज्ञा और धर्मत्याग पर कायम रहा।

इस प्रकार, एलीशा के पहले कार्य उसके मंत्रालय के संकेत थे जो ईश्वर की वाचा के आशीर्वाद का पालन करेंगे जो उन लोगों का अनुसरण करेंगे जो उसकी ओर देखते थे। आप देखते हैं कि जेरिको में पानी का उपचार था, जो उन प्रश्नों में से एक का उत्तर था। उनका पहला कार्य, उनके मंत्रालय की शुरुआत, उन आशीर्वादों का संकेत था जो उन लोगों के लिए आएंगे जो उनकी ओर देखते थे क्योंकि वाचा के श्राप उन लोगों के लिए होंगे जो उनसे दूर हो गए थे। तो मुझे ऐसा लगता है कि उन युवाओं के रिश्ते, या रवैये में कुछ प्रतीकात्मकता शामिल है, जो आप कह सकते हैं, एलीशा और प्रभु के प्रति राष्ट्र के रवैये के खिलाफ थे। उस कार्रवाई में, यह सिर्फ एक व्यक्तिगत बदला नहीं है, किसी ऐसे व्यक्ति पर पलटवार करना है जो उसे ताना मार रहा था। इसका महत्व

उनके कार्यालय में दिखता है। लेकिन यह प्रभु के प्रति राष्ट्र के रवैये को भी दर्शाता है क्योंकि निश्चित रूप से एलीशा के प्रति रवैये में प्रभु के प्रति वह रवैया शामिल था क्योंकि वह प्रभु का भविष्यवक्ता था। पाठ उसे खुला छोड़ देता है; यह नहीं कहता कि वे मारे गये। मुझे यकीन नहीं है कि इसके पीछे हिब्रू शब्द क्या है। मैं इसे जाँचने के लिए एक नोट बना सकता हूँ और अगले सप्ताह इस पर टिप्पणी करने के लिए याद रखने का प्रयास कर सकता हूँ। वह 2 राजा 2:24 है।

डी. अहिय्याह की यारोबाम को चेतावनी - 1 राजा 14

आइए अहिय्याह की चेतावनी पर वापस जाएँ, 1 राजा 14. वही भविष्यवक्ता जिसने यारोबाम से कहा था कि उसे एक राज्य दिया जाएगा, अब घोषणा करता है कि यह उससे छीन लिया जाएगा। यह छंद 7 और अध्याय 14 के बाद में है। यहोवा अहिय्याह से कहता है, “जाकर यारोबाम से कहो कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा क्या कहता है, कि मैं ने तुझे प्रजा के बीच से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल पर प्रधान बनाया है। मैं ने दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझे दे दिया है, परन्तु तू मेरे दास दाऊद के समान नहीं हुआ, जो मेरी आज्ञाओं को मानता और अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पीछे चलता था, और वही काम करता था जो मेरी दृष्टि में ठीक है। तू ने उन सब से अधिक बुरा काम किया है जो तुझ से पहिले जीवित रहे। तू ने अपने लिये अन्य देवता, और धातु की मूर्तें बना लीं। तूने मुझे क्रोधित किया है और मुझे अपनी पीठ के पीछे धकेल दिया है। इस कारण मैं यारोबाम के घराने पर विपत्ति लाने पर हूँ। मैं यारोबाम के वंश में से इस्राएल के सब पुरूषों को, चाहे दास हो या स्वतंत्र, नाश कर डालूंगा। मैं यारोबाम के घराने को ऐसे जलाऊंगा जैसे कोई गोबर को तब तक जलाता है जब तक वह सब नष्ट न हो जाए। यारोबाम के वंश के जो लोग नगर में मरेंगे उनको कुत्ते खा लेंगे, और जो देश में मरेंगे उनको आकाश के पक्षी खा लेंगे। प्रभु ने कहा है।”

इस प्रकार न्याय का सन्देश अहिय्याह द्वारा यारोबाम को दिया गया। जैसा कि आपको याद है, यह प्रसंग यारोबाम द्वारा एलिय्याह से उसके बीमार बेटे के बारे में पूछने का है। वह अपनी पत्नी को भेष बदलकर भेजता है, और वह ऐसा करके एलिय्याह को मूर्ख नहीं बनाता है। लेकिन उसे बताया गया है कि बेटा मर जाएगा। और आप इसे श्लोक 12 में पाते हैं जहाँ वह कहता है, “जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम घर लौट जाओ।” जब तू अपने नगर में पांव रखेगा, तब लड़का मर जाएगा।”

मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि आपको उस चीज़ का प्रतिबिंब मिलता है जिसे अक्सर "संविदा मुकदमा" कहा जाता है। मुझे लगता है कि आपको उस वाचा के मुकदमे और अहिजा द्वारा सुनाए गए फैसले का प्रतिबिंब मिलता है। आप छंद 7 और 8 में ध्यान दें कि अहिय्याह प्रभु के दयालु कृत्यों का वर्णन करता है: "मैंने तुम्हें लोगों के बीच से उठाया और तुम्हें अपने लोगों इस्राएल पर नेता बनाया। और मैं ने दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुम्हें दे दिया है।"

तो आप में से जो लोग हिती संधियों और बाइबिल की अनुबंध सामग्री के बीच समानता से परिचित हैं, हिती संधियाँ उस ऐतिहासिक प्रस्तावना से शुरू होती हैं। और बाइबिल की वाचा भी प्रभु के दयालु कृत्यों से मेल खाती है: "मैं वह प्रभु हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया। इसलिए, यह करो, यह करो और यह करो।" ताकि जब इस्राएल वाचा से मुकर जाए और इस्राएल को वाचा में वापस लाने के लिए एक भविष्यवक्ता को भेजा जाए, तो आप अक्सर भविष्यवाणी की पुस्तकों में पाएंगे (अब यह भविष्यवाणी की किताब में नहीं है बल्कि यह एक भविष्यवक्ता बोल रहा है) कि भविष्यवक्ता ऐसा करेंगे एक ऐसे प्रपत्र का उपयोग करें जो उस अनुबंध प्रपत्र को दर्शाता हो। वे सबसे पहले प्रभु के दयालु कृत्यों का पाठ करेंगे: "मैंने जो किया है वह यहाँ है, लेकिन आपने जो किया है वह यहाँ है। मैं विश्वासयोग्य और दयालु रहा हूँ, परन्तु तुम मुझसे दूर हो गए और अवज्ञाकारी हो गए," और फिर सजा सुनाता है। तो आप यहाँ 7 और 8ए में देखते हैं कि आपके पास प्रभु के दयालु कार्य हैं। और 8बी और 9 में आप पर अभियोग है, "परन्तु आप मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं रहे। तू ने उन सभों से जो तुझ से पहिले थे, अधिक बुरा काम किया है। तुम ने अपने लिये दूसरे देवता बना लिये हैं। और फिर तीसरा तत्व वह वाक्य है जो आपके पास 1 राजा 14, श्लोक 10 और निम्नलिखित में है: "इस वजह से, मैं यही करने जा रहा हूँ।" इसलिए मुझे लगता है कि आपको इसका कुछ प्रतिबिंब वहाँ उस संदेश के रूप में मिलेगा जो अहिजा लाता है। ठीक है, वह "डी" " यारोबाम को

अहिय्याह की चेतावनी" थी। ई. नादाब का शासनकाल - 1 राजा 15:25-28 आपकी शीट पर "ई" है: "नादाब का शासनकाल, 1 राजा 15:25-28।" अध्याय 14 में और अध्याय 15 के आरंभिक भाग में आप रहूबियाम के साथ यहूदा वापस चले जाते हैं। लेकिन फिर 15:25 पर आपने पढ़ा: "यहूदा के

राजा आसा के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल का राजा बना। उसने इस्राएल पर दो वर्ष तक राज्य किया।" नादाब ने केवल दो वर्ष तक राज्य किया। आपके पास केवल ये चार श्लोक हैं जो उसके बारे में बात करते हैं, श्लोक 25-28। वह वास्तव में एक महत्वपूर्ण राजा नहीं है, और जिसे आप राजमहल विद्रोह कह सकते हैं, उसमें वह मारा गया है। पद 27 में आप पढ़ते हैं, "इस्साकार के घराने के अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, और गिब्बतोन नामक पलिशती नगर में उसे मार डाला, जबकि नादाब और सारे इस्राएल ने उसे घेर रखा था। यहूदा के राजा आसा के तीसरे वर्ष में

बाशा ने नादाब को मार डाला और उसके स्थान पर राजा हुआ।" 2. बाशा का राजवंश

एक। बाशा का उत्तराधिकार

तो यह हमें "2," " बाशा का राजवंश " पर लाता है और मेरे पास वहां कई उप-बिंदु हैं। "ए" "उसका उत्तराधिकार" है। मैं बाशा के इस राजवंश पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहा हूँ, लेकिन उसका उत्तराधिकार 1 राजा 15:27-30 और फिर 33 और 34 है। जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं, बाशा ने नादाब को मार डाला था जो यारोबाम का पुत्र था। तब उसने एलिय्याह की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए यारोबाम के सारे घराने को मार डाला कि यारोबाम का घराना नष्ट हो जाएगा। तो आप श्लोक 29 में पढ़ते हैं, "उसने यारोबाम को किसी को मरने न दिया; यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने यारोबाम के पापों के कारण अपने दास शिलोवासी अहिय्याह को दिया था, उसने उन सब को नष्ट कर दिया। बी। यहूदा के विरुद्ध बाशा के युद्ध - 1 राजा 15:32

ठीक है, "बी" है: "यहूदा के विरुद्ध उसके युद्ध, 1 राजा 15:32।" हमारे पास अभी संक्षिप्त विवरण था, "आसा और इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके पूरे शासनकाल में युद्ध होता रहा।" अब जब आप दक्षिण में आसा के शासन के बारे में पढ़ते हैं तो हम इसके बारे में और अधिक पढ़ते हैं। बाशा ने दक्षिण में आसा से युद्ध किया। उस शत्रुता का कारण उत्तरी लोगों को पूजा करने के लिए दक्षिण जाने से रोकने का प्रयास था। यारोबाम ने वहां वेदियां बनाईं। वह इसके बारे में चिंतित था, और जैसे ही बाशा सिंहासन पर आया, वह अभी भी इसके बारे में चिंतित है। जैसा कि हमने

पिछले सप्ताह चर्चा की थी, जब बाशा दक्षिण पर हमला करता है, तो बाशा सीरिया में दमिश्क के बेन-हदद के साथ गठबंधन करने के लिए आसा को उकसाता है। तब बाशा को उस दबाव को रोकने के लिए मजबूर होना पड़ा जो वह दक्षिण पर डाल रहा था। ठीक है, ये यहूदा के विरुद्ध उसके युद्ध थे।

सी। येहू की भविष्यवाणी - 1 राजा 16:1-7 "सी," "येहू की भविष्यवाणी, 1 राजा 16:1-7।" अब येहू को यहाँ "हनानी का पुत्र येहू" कहा गया है। यह वही येहू नहीं है जो बाद में राजा बना। परन्तु यह येहू एक भविष्यद्वक्ता था, और उस ने बाशा से कहा, कि उसका घराना यारोबाम के समान नष्ट हो जाएगा। आपने श्लोक 3 में पढ़ा कि प्रभु येहू के माध्यम से कहते हैं, "मैं बाशा और उसके घराने को नष्ट करने पर हूँ। मैं तेरे घराने को नबात के पुत्र यारोबाम के सदृश बनाऊंगा। बाशा के परिवारजनों में से जो नगर में मरेगा, उसे कुत्ते खा लेंगे, और जो कोई गांव में मर जाएगा, उसे आकाश के पक्षी खा लेंगे।"

डी। एला का शासनकाल - 1 राजा 16:8

"डी," है: "इला का शासनकाल, 1 राजा 16, पद 8 और निम्नलिखित।" वह बाशा का पुत्र था, और फिर भी, कोई महत्वपूर्ण राजा नहीं था। उसने केवल दो वर्ष तक शासन किया। आपने पद 8 के अंत में पढ़ा, "बाशा का पुत्र एला इस्राएल का राजा हुआ, और उसने तिसर्ता में दो वर्ष तक राज्य किया।"

तब आपको एक और क्रांति मिलती है जो है "ई," "जिमरी का हड़पना, 1 राजा 16:9-13।" एला के हाकिमों में से एक जिम्री ने उसके विरुद्ध षड़यंत्र रचा। और आपने 10 में पढ़ा, "जिम्री ने अंदर आकर उसे मारा और मार डाला,... फिर उसके स्थान पर राजा बना।" अतः जिम्री एला के हाकिमों में से एक था। वह उसके खिलाफ साजिश रचता है। वह उसे मार डालता है और फिर वही करता है जो बाशा ने किया था। वह बाशा के सारे घराने को मार डालता है। और आपने पद 11 में पढ़ा: "उसने बाशा के पूरे परिवार को मार डाला। चाहे वह रिश्तेदार हो या दोस्त, उसने एक भी पुरुष को नहीं छोड़ा।" हालाँकि, जिमरी का शासनकाल बहुत अल्पकालिक था। उसने सात दिन

तक राज्य किया। आपने पद 15 में पढ़ा: " जिम्मी ने तिसर्सा में सात दिन तक राज्य किया।" और फिर उसने खुद को मार डाला. आप पद 18 में पढ़ते हैं, जब ओम्री तिसर्सा के विरुद्ध चढ़ाई करता है जहाँ जिम्मी था, आप पद 17 में पढ़ते हैं, “ ओम्री और उसके साथ के सभी इस्राएली गिब्बथोन से हट गए और तिसर्सा को घेर लिया। जब जिम्मी ने देखा कि शहर ले लिया गया है, तो वह शाही महल के गढ़ में गया और अपने चारों ओर महल में आग लगा दी। इस प्रकार वह अपने पापों के कारण मर गया, जो उसने यारोबाम के मार्ग पर चलकर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया था।

एफ। अंतराल, चार वर्ष और फिर आपकी शीट पर "एफ" है: "मैं अंतराल , चार वर्ष।" ऐसा प्रतीत होता है कि जिम्मी की मृत्यु के बाद , ऐसा प्रतीत होता है कि राजसत्ता के लिए ओम्री और तिब्नी के बीच संघर्ष का समय था। ऐसा लगता है कि चार साल पहले ही ओमरी ने आखिरकार जीत हासिल की और राजा और शासक घोषित होने के लिए पर्याप्त शक्ति हासिल कर ली। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यदि आप 1 राजा 16:15 को देखें तो आप वहाँ पढ़ते हैं, " यहूदा के राजा आसा के 27^{वें} वर्ष में जिम्मी ने तिसर्सा में सात दिन तक राज्य किया।" और फिर जिम्मी खुद को मार डालता है। लेकिन आप इसकी तुलना 16:23 से करते हैं जहाँ ओम्री राजा बनता है और आप पढ़ते हैं, “यहूदा के राजा आसा के 31^{वें} वर्ष में, ओम्री इस्राएल का राजा बना। उसने 12 वर्ष तक राज्य किया।” उनमें से छः तिसर्सा में; वह पद 23 है। अतः यह आसा के 27^{वें} वर्ष की तुलना में 31^{वां} वर्ष है। तो ऐसा लगता है जैसे वहाँ चार साल की अवधि है जहाँ ओमरी और तिब्नी के बीच संघर्ष है । श्लोक 21 में, "इस्राएल के लोग दो गुटों में विभाजित हो गए: आधे लोग राजा के लिए तिब्नी का समर्थन करते थे , दूसरे आधे लोग ओम्री का समर्थन करते थे । लेकिन ओम्री के अनुयायी तिब्नी के अनुयायियों से अधिक मजबूत साबित हुए । अतः तिब्नी मर गया, और ओम्री राजा बन गया।” वह वास्तव में आधिकारिक तौर पर आसा के 31^{वें} वर्ष में शासन करना शुरू करता है। तो ऐसा लगता है कि वास्तव में अस्थिरता और अनिश्चितता का एक लंबा दौर चल रहा है कि वास्तव में कौन जीतेगा और राजा बनेगा।

ओमरी का राजवंश

1. ओम्री स्वयं - 1 राजा 16:15-28

ए। उत्तराधिकार - 1 राजा 16:21-22 बी. उनका नया कैप्टिअल

ठीक है, यह हमें "डी" तक ले आता है, यह इज़राइल के पहले दो राजवंश थे। "डी" " ओमरी का राजवंश " है। और "डी" के अंतर्गत "1" " ओमरी स्वयं, 1 राजा 16:15-28" है। मेरे वहां तीन उप-बिंदु थे, पहला है: "उत्तराधिकार, 1 राजा 16:21, 22।" हम पहले ही उस पर गौर कर चुके हैं। आपने श्लोक 21 और 22 में ओमरी और तिब्नी के बीच उस संघर्ष के बारे में पढ़ा, और फिर वास्तव में श्लोक 23 में आपने पढ़ा कि वह राजा बन गया। तुमने पढ़ा कि उसने 12 वर्ष तक शासन किया, उनमें से छः तिसा में, अर्थात् उसने सामरिया में छः वर्ष तक शासन किया। आपकी शीट पर "डी" है: "उनकी नई राजधानी।" आपने पद 24 पढ़ा, "उसने सामरिया की पहाड़ी को शेमेर से दो किक्कार चाँदी में खरीदा और पहाड़ी पर एक नगर बसाया, जिसका नाम पहाड़ी के पूर्व स्वामी शेमेर के नाम पर सामरिया रखा गया।" ओम्री एक महत्वपूर्ण शासक है। वह एक ऐसी साइट का चयन करता है जो रणनीतिक रूप से स्थित साइट थी। यह अच्छी तरह से चुना गया था, एक पहाड़ी पर स्थित था, बचाव करना आसान था, उत्तरी साम्राज्य के क्षेत्र में केंद्रीय रूप से स्थित था और उसने वहां एक नया राजधानी शहर स्थापित किया था। उस समय से 722 ईसा पूर्व में बंदी बनाए जाने तक सामरिया उत्तरी साम्राज्य की राजधानी बना रहा, यह जल्द ही यरूशलेम से भी बड़ा होकर फिलिस्तीन का सबसे महत्वपूर्ण शहर बन गया। जब आखिरकार अश्शूरियों ने आकर उत्तरी साम्राज्य पर हमला किया, तो सामरिया तीन साल तक टिके रहने में सक्षम हो गया। उन्होंने उस शहर की घेराबंदी कर दी जिस पर कब्ज़ा करना कठिन था और वे तब तक विरोध करने में सक्षम थे जब तक अंततः उन्हें आत्मसमर्पण नहीं करना पड़ा। लेकिन ओम्री ने एक नई राजधानी स्थापित की।

सी। उनकी स्टेट्समैनशिप "सी" "उनकी स्टेट्समैनशिप" है। यह आपकी रूपरेखा पर है। इसके बारे में बहुत कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन जाहिर तौर पर उसने यहूदा के साथ दोस्ती की। हम ओमरी के समय में उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच युद्धों के बारे में नहीं पढ़ते हैं। वहां संघर्ष का

कोई जिक्र नहीं है. ऐसा लगता है कि उसने आसपास के कुछ राष्ट्रों के साथ गठबंधन किया था, और फोनीशियन के मामले में यह स्पष्ट है क्योंकि उसके बेटे अहाब ने इज़ेबेल से शादी की थी जो सोर के राजा की बेटी थी। आपने पढ़ा कि 1 राजा 16, श्लोक 31 में, अहाब पर टिप्पणियों के तहत जहां यह कहा गया है कि " उसने सीदोनियों के राजा एथबाल की बेटी इज़ेबेल से विवाह किया , और बाल की सेवा और उसकी पूजा करने लगा"। लेकिन निस्संदेह वह ओम्री और सिदोनियों के राजा

एथबाल के बीच संपन्न एक विवाह गठबंधन था। डी। ओमरी का महत्व

ठीक है "डी" है: "उसका महत्व।" 1 किंग्स में उसके बारे में बहुत कुछ नहीं कहा गया है। आपके पास केवल श्लोक 23-28, छः श्लोक हैं। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि असीरियन अभिलेखों में, इज़राइल को 733 में टिग्लथ-पिलेसर III द्वारा " ओमरी की भूमि" कहा गया है। तो यह 733 ईसा पूर्व है, 150 साल बाद। ओम्री लगभग 880 ईसा पूर्व होगा। 733 ईसा पूर्व में, टिग्लथ-पिलेसर III, इज़राइल का जिक्र करते हुए, इसे " ओमरी की भूमि " के रूप में बोलता है। शल्मनेसर III येहू को " ओमरी का पुत्र " कहता है। येहू श्रद्धांजलि देने वाले असीरियन शासक के सामने घुटने टेक रहा है, लेकिन शल्मनेसर येहू को " ओमरी का पुत्र" कहता है, जो दिलचस्प है क्योंकि वह वास्तव में ओम्री का पुत्र नहीं था। वास्तव में, येहू ही वह व्यक्ति था जिसने ओम्री के वंश, या अहाब के वंश को मिटा दिया था। लेकिन आप देख सकते हैं कि यह नाम उन अश्शूरियों के लिए महत्वपूर्ण था जो इज़राइल में शाही वंश के सभी विवरण नहीं जानते थे। वह ओम्री के पुत्र के रूप में जाना जाता है क्योंकि वह सामरिया में सिंहासन पर है। और फिर मोआबी पत्थर पर मोआब के राजा मेशा का भी कहना है कि " इज़राइल के राजा ओम्री ने कई वर्षों तक मोआब को नीचा दिखाया और मेदाबा की भूमि पर कब्ज़ा कर लिया।" मेदाबा जॉर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर जेरिको के पूर्व में एक क्षेत्र है। तो इनमें से कुछ अतिरिक्त-बाइबिल संदर्भों से, आपको यह विचार मिलता है कि ओम्री एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था, भले ही बाइबिल का पाठ उसके बारे में बहुत कुछ नहीं कहता है।

अब, मैंने इस पाठ्यक्रम में पहले इसके बारे में कुछ कहा था, और मुझे लगता है कि बाइबिल के पाठ में ओम्री पर ध्यान न देने का कारण यह है कि 1 और 2 राजाओं के लेखक का उद्देश्य

राजनीतिक, आर्थिक कारकों पर ध्यान देना नहीं है। यह वाचा संबंधी मुद्दे हैं - प्रभु के प्रति इज़राइल की वफादारी के मुद्दे जो लेखक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। और इसलिए ओम्री पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, वह ओम्री के बेटे अहाब पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसने इज़ेबेल के साथ अपने विवाह के माध्यम से बाल पूजा की शुरुआत की थी। आपको अहाब को समर्पित अनेक संपूर्ण अध्याय मिलते हैं, ओम्री की तुलना में कहीं अधिक। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि अहाब का ओम्री से संबंध इस अर्थ में सुलैमान और डेविड के समान है: प्रत्येक को वह राज्य विरासत में मिला जो उसके पिता ने स्थापित किया था। आप कह सकते हैं कि डेविड द्वारा वास्तव में राज्य का निर्माण करने के बाद सुलैमान घटनास्थल पर आया। और ओम्री द्वारा इज़राइल के उत्तर में एक महत्वपूर्ण राज्य स्थापित करने के बाद अहाब दृश्य में आता है। प्रत्येक को वह राज्य विरासत में मिला जो उसके पिता ने स्थापित किया था।

2. अहाब -- 1 राजा 16-22 अ. अहाब का व्यक्ति - 1 राजा 16:29-34 ठीक है, यह हमें अहाब तक लाता है, जो आपकी शीट में संख्या, "2" है। वहां अहाब को समर्पित कई अध्याय (अध्याय 16-22) हैं। आपने देखा कि मेरे यहां भी कुछ उप-बिंदु हैं। एलिजा और एलीशा का मंत्रालय, एक बड़े हिस्से में, अहाब के समय में फिट बैठता है। अब एलीशा उससे आगे बढ़कर अहाब के पुत्रों के समय में चला गया। लेकिन आइए पहले अहाब के व्यक्तित्व को देखें, 1 राजा 16:29-34। “ यहूदा के राजा आसा के राज्य के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल का राजा हुआ, और सामरिया में इस्राएल पर बाईस वर्ष तक राज्य करता रहा। ओम्री के पुत्र अहाब ने यहोवा की दृष्टि में अपने पहिले के सब से अधिक बुरे काम किए। उसने न केवल नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को करना तुच्छ समझा, बल्कि उसने सीदोनियों के राजा एथबाल की बेटी इज़ेबेल से भी विवाह किया, और बाल की सेवा और उसकी पूजा करने लगा। उसने सामरिया में बाल के मन्दिर में बाल के लिये एक वेदी स्थापित की। अहाब ने एक अशेरा नाम खम्भा भी बनवाया, और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के लिये उस से पहिले इस्राएल के सब राजाओं से भी अधिक काम किए। अहाब के समय में, बेतेल के हीएल ने जेरिको का पुनर्निर्माण किया। उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा कहे हुए यहोवा के वचन के अनुसार अपने पहिलौठे पुत्र

अबीराम की कीमत पर उसकी नेव डाली , और अपने सबसे छोटे पुत्र सगूब की कीमत पर उस ने उसके फाटक खड़े किए । इसलिए जहां तक उसके व्यक्तित्व का सवाल है, उसे अपने से पहले के किसी भी राजा की तुलना में अधिक बुराई करने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। उसने न केवल यारोबाम की बछड़े की पूजा को जारी रखा - और यह लगभग एक तुच्छ बात बन जाती है - वह उससे कहीं आगे चला जाता है और बाल पूजा की स्थापना करता है। तो स्पष्ट रूप से वह न केवल दूसरी आज्ञा का, बल्कि पहली आज्ञा का भी उल्लंघन करता है। उसने अन्य देवताओं की सेवा की।

जेरिको आपके पास उन चीजों की सूची है जो उसने कीं जो जेरिको के पुनः किलेबंदी के संदर्भ में समाप्त होती हैं , श्लोक 34। जेरिको विजय के समय से ही "खुला शहर" बना हुआ था। याद रखें जब इस्राएली कनान में आए, तो जब वे शहर के चारों ओर घूम रहे थे तो प्रभु ने जेरिको को उनके हाथों में दे दिया और दीवारें गिर गईं। वे प्रभु के हाथों नष्ट हो गये। और उस समय यहोशू ने उस किसी को भी श्राप दिया जो यरीहो की सहायता करेगा।

अब मुझे लगता है कि इसमें कुछ महत्व है। आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं, "जेरिको को एक खुला शहर क्यों रहना था?" मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर की मंशा यह है कि वे खंडहर दीवारें सभी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक गवाही, या एक प्रतीक बनें कि इसराइल को उसकी कृपा के उपहार के रूप में प्रभु के हाथ से भूमि प्राप्त हुई थी। यह उनकी सैन्य रणनीति या सैन्य ताकत नहीं थी जिसने कनान की भूमि उनके लिए हासिल कर ली। प्रभु ने उन्हें यह दिया। और उन खंडहरों को इस तथ्य का एक स्मारक बनना था कि उन्हें भगवान की कृपा के उपहार के रूप में उनके हाथ से भूमि मिली थी। इसलिए इसे इस तथ्य के प्रमाण के रूप में एक खुला शहर रहना था कि इज़राइल की सुरक्षा सैन्य किलेबंदी में निहित नहीं है। उनकी सुरक्षा कहीं और निर्भर थी, यह भगवान की आज्ञाकारिता में थी, और भगवान ने वादा किया था कि वह उनकी रक्षा करेंगे।

लेकिन अब आपको उत्तर में सिंहासन पर एक राजा मिलता है जो एक सच्चा वाचा राजा नहीं है, और वह उस शहर को उसकी खंडहर दीवारों के साथ देखता है, और उसके निर्णय में यह एक ताकत के बजाय एक दायित्व है। यह वादे के प्रतीक के बजाय एक दायित्व है। तो आपने पढ़ा

कि अहाब के समय में, हीएल ने जेरिको का पुनर्निर्माण किया और मुझे लगता है कि इसे इसे फिर से मजबूत करने, दीवारों का पुनर्निर्माण करने के रूप में समझा जाना चाहिए। यह नींव डालने और उसके द्वार स्थापित करने की बात करता है। लेकिन वह यहोशू के श्राप के अनुसार अपने दो बेटों की कीमत पर ऐसा करता है।

यह जोशुआ 6:26 पर वापस जाता है। यहोशू के अध्याय छह में जेरिको को लेने के बारे में बताया गया है और यहोशू श्लोक 26 में कहता है, "वह आदमी प्रभु के सामने शापित है जिसने इस शहर जेरिको को फिर से बनाने का काम किया है। वह अपने पहलौठे पुत्र की कीमत पर इसकी नींव रखेगा; वह अपने सबसे छोटे बच्चे की कीमत पर इसके द्वार स्थापित करेगा।" और आप उस पूरे समय के बारे में सोचते हैं, न्यायाधीशों के समय से लेकर शाऊल के समय तक, दाऊद के समय से लेकर सुलैमान के समय तक, यहाँ तक कि सभी महान लोगों के समय तक भी। सुलैमान की निर्माण गतिविधि के बावजूद, जेरिको एक खुला शहर बना रहा। यह इस पर निर्भर करता है कि आप विजय का समय कैसे निर्धारित करते हैं, लेकिन यदि आप इसे 1446 ईसा पूर्व में रखते हैं, तो आप अब 800, पाँच या छह सौ वर्षों में पहुँच गए हैं। इसलिए यह लंबे समय तक एक दुर्गम शहर बना रहा। लेकिन अब अहाब को यह पसंद नहीं है। मुझे लगता है कि अहाब का रवैया यह है कि वह भगवान पर नहीं बल्कि अपनी सैन्य रणनीतियों और किलेबंदी और सेनाओं आदि पर भरोसा कर रहा है।

बी। अहाब की पत्नी इज़ेबेल - 1 राजा 16:31 "बी" "उसकी पत्नी, 1 राजा 16:31" है। उसने सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी इज़ेबेल से विवाह किया। सूर और सीदोन फ़ीनिशिया के तट पर समृद्ध समुद्री-व्यापारिक नगर थे। यह विवाह संभवतः एथबाल और अहाब के पिता ओमरी के बीच गठबंधन के संबंध में तय किया गया था। जैसा कि हम बाद की कहानियों में पढ़ते हैं, इज़ेबेल एक बहुत ही मजबूत इरादों वाली और क्रूर महिला बन जाती है। वह संभवतः यह सोचकर इज़राइल आई थी कि ये लोग पिछड़े लोग हैं, सोर और सिडोन की तुलना में असंस्कृत लोग हैं, यह सोचकर कि उनका धर्म अस्वीकार्य है। इसलिए वह बाल पूजा की स्थापना करती है और बाल के 450 नबियों और देवी अशेरा के 400 नबियों का एक समूह बनाए रखती है। आपने 1 राजा 18:19 में

पढ़ा, “पूरे इस्राएल से लोगों को कर्मेल पर्वत पर मेरे पास आने के लिए बुलाओ। बाल के 450 नबियों और अशोरा के 400 नबियों को लाओ जो ईज़ेबेल की मेज पर खाते हैं।” इसलिए उसने इन 850 बुतपरस्त भविष्यवक्ताओं के लिए प्रावधान किया जिन्हें उसने उत्तरी साम्राज्य में आयात किया था।

वह यह भी दिखाती है कि राजसत्ता का उसका विचार नाबोथ के अंगूर के बाग के मामले में राजसत्ता के बाइबिल या वाचा के विचार के बिल्कुल विपरीत है। याद रखें कि अहाब अप्रसन्न था क्योंकि वह नाबोथ को अपना अंगूर का बाग बेचने के लिए मना नहीं सका, और इज़ेबेल उसमें प्रवेश करती है और न्यायिक प्रणाली का दुरुपयोग करती है। वह नाबोथ के विरुद्ध गवाही देने के लिए झूठे गवाहों की व्यवस्था करती है ताकि उसे पत्थर मार दिया जाए। फिर वह संपत्ति लेती है और अहाब को दे देती है। ये वो घटना है। निःसंदेह, अहाब की इसमें कुछ मिलीभगत थी कि वह इसके साथ गया, और यही वह घटना है जो अहाब के घराने पर एलिय्याह के न्याय की भविष्यवाणी की ओर ले जाती है। लेकिन इज़ेबेल निश्चित रूप से इस समय उत्तरी साम्राज्य में एक प्रमुख व्यक्ति हैं और उत्तरी साम्राज्य में बुतपरस्त पूजा की शुरुआत में उनकी सक्रिय भूमिका थी। 1 राजा 16:32, 33, “उस ने सामरिया में जो मन्दिर बनवाया, उस में बाल के लिये एक वेदी स्थापित की, और एक अशोरा नाम का खम्भा बनाया, और सब कामों से बढ़कर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध भड़काया। उसके पहले इस्राएल के राजा थे।”

जब यारोबाम ने सुनहरे बछड़ों की स्थापना की थी, तो हमने इसके बारे में पहले बात की थी, ऐसा लगता है कि यद्यपि वह अभी भी दूसरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा था: “तू अपने लिए कोई खोदी हुई मूर्ति न बनाना,” वह अभी भी भगवान की पूजा करने का प्रयास कर रहा था, हालांकि अनुचित तरीके से मतलब, लेकिन यह अभी भी भगवान था। जब उसने ऐसा किया, तो यहूदा में से परमेश्वर के उस जन ने इसके लिये उसे डांटा। और बाशा जब बछड़े की पूजा करने लगा, तो हनानी के पुत्र येहू ने उसे डांटा। लेकिन अब आपके पास एक नई चीज़ है: यह सिर्फ एक सुनहरा बछड़ा नहीं है। अब यह बाल पूजा है, और इसकी शुरुआत अहाब ने की है।

एलिजा और एलीशा टी वह भगवान एलिजा और एलीशा को भेजकर इसका विरोध करता है। तो यहां किंग्स की पुस्तक के केंद्र में, 1 किंग्स के अंत में और 2 किंग्स के पहले भाग में ओवरलैपिंग में,

आपके पास एलिय्याह और एलीशा के मंत्रालयों को दी गई बहुत सारी सामग्री है। मेरा मानना है कि कनान में प्रवेश के समय से लेकर ईसा के समय तक बाल पूजा इसराइल के धार्मिक जीवन में सबसे बड़े संकट का प्रतिनिधित्व करती थी। यदि आप इस पर विचार करें तो यह इजराइल के लिए एक गंभीर संकट है। क्या परमेश्वर के लोगों के बीच सच्चा विश्वास बना रहेगा? इसलिए एलिय्याह और एलीशा के मंत्रालयों पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है क्योंकि वे उस मुद्दे का सामना करते हैं।

दिलचस्प बात यह है: आपके पास यहां चमत्कारों और संकेतों के महानतम कालखंडों में से एक भी है, बाइबिल में कहीं भी पाए जाने वाले सबसे महानतम कालखंडों में से एक। ऐसा लगता है कि संकेत और चमत्कार आमतौर पर मुक्ति के इतिहास में महान मोड़ के साथ आते हैं। यदि आप उस पर एक मिनट भी विचार करें, तो मुझे लगता है कि आपके पास बाइबिल के इतिहास में मूल रूप से महान चमत्कारों के चार कालखंड हैं। निर्गमन और विजय के समय यह आपके पास था। एलिय्याह और एलीशा के समय में वे आपके यहाँ थे। और फिर आप उन्हें मसीह के जीवन के दौरान और चर्च के शुरुआती दिनों में भी प्राप्त करते हैं। ये मुक्ति के इतिहास में महान मोड़ हैं, और फिर आपको मुक्ति के इतिहास के उन महत्वपूर्ण समय में चमत्कारों की प्रचुरता मिलती है।

ठीक है, मैं यहां जो करना चाहता हूं वह अहाब के बारे में हमारी चर्चा को थोड़ा रोकना है और उस चीज़ की चर्चा की ओर मुड़ना है जो मैंने कहा है कि मैं चर्चा करने जा रहा हूं और वह है: हम आज के लिए इन आख्यानों के अर्थ को कैसे समझें? दूसरे शब्दों में, आप पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यानों पर कैसे प्रचार करते हैं? आइए एक ब्रेक लें और जब हम वापस आएँ, तो मैं शुरू में उस मुद्दे को कुछ हद तक अधिक सैद्धांतिक तरीके से संबोधित करना चाहता हूं, और शायद आज रात हम बस इतना ही करेंगे। फिर हम एलिय्याह के मंत्रालय के इन आख्यानों में से कुछ को देखेंगे, जहां हम उन कुछ अंशों से यह समझाने का प्रयास करेंगे कि हमने किस बारे में अधिक सैद्धांतिक तरीके से बात की थी। हम इन आख्यानों का अर्थ कैसे समझें? तो आइए 10 मिनट का ब्रेक लें और वापस आएँ, और हम उसमें आगे बढ़ेंगे।

अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा किया गया
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया